https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य

Braj Bhushan Vibhuti*, Dr Brijlata Sharma

*M. Phil Research Scholar, Dept. Of. Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand
Asst. Professor, Dept. Of. Hindi, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

संकेत शब्द: निर्मल वर्मा, साहित्य

ABSTRACT

रोजमर्रा की घटनाओंए मानवीय आदतोंए कमियों.खूबियों को निर्मल वर्मा ने उतने ही सहज रूप में लिखा है जितना बाकी की दुनिया ने उसे कठिन बना रखा है। निर्मल वर्मा खुद भी मस्त रहते थे और कोशिश करते थे कि आस.पास सब मगन रहेंए जीते रहें। निर्मल वर्मा जिंदगी के नैराश्य से हाथ छुड़ाकर भागने में यकीन नहीं रखते थेए बल्कि उसका आनंद लेते थे।

Citation: *Braj Bhushan Vibhuti, Dr Brijlata Sharma (2018). निर्मल वर्मा के कथा साहित्य. International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281 Vol 1, Issue 8, Octoberr, 2018, #Art.816 pp 44-50*

https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

1. परिचय

निर्मल वर्मा ;३ अप्रैल १९२९. २५ अक्तूबर २००५द्ध हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। शिमला में जन्मे निर्मल वर्मा को मूर्तिदेवी पुरस्कार;१९९५द्धए साहित्य अकादमी पुरस्कार ;१९८५द्ध उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। परिंदे से प्रसिद्धि पाने वाले निर्मल वर्मा की कहानियां अभिव्यक्ति और शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ समझी जाती हैं। ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी श्री नंद कुमार वर्मा के घर जन्म लेने वाले आठ भाई बहनों में से पांचवें निर्मल वर्मा की संवेदनात्मक बुनावट पर हिमांचल की पहाड़ी छायाएं दूर तक पहचानी जा सकती हैं। हिन्दी कहानी में आधुनिक. बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अग्रणी स्थान है। उन्होंने कम लिखा है परंतु जितना लिखा है उतने से ही वे बहुत ख्याति पाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहानीकी प्रचलित कला में तो संशोधन किया हीए प्रत्यक्ष यथार्थ को भेदकर उसके भीतर पहुंचने का भी प्रयत्न किया है।[ख] हिन्दी के महान साहित्यकारों में से अज्ञेय और निर्मल वर्मा जैसे कुछ ही साहित्यकार ऐसे रहे हैं जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अंतर्द्वन्द्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।[ख]

निर्मल वर्मा का मुख्य योगदान हिंदी कथा.साहित्य के क्षेत्र में माना जाता है। 1970 तक निर्मल यूरोप प्रवास पर रहे। यूरोप के पूर्वी.पश्चिमी हिस्सों में वो खूब घूमे और वहां रहकर उन्होंने आधुनिक यूरोपीय समाज का गहरा अध्ययन किया।

निर्मल वर्मा वे लेखक हैंए जिन्होंने अपनी रचनाओं में नई और एक अलग ही दुनिया गढ़ दी। हम जब उन्हें पढ़ते हैं तो उनके साथ उनकी रचनाओं में सफर करने लगते हैं। रोजमर्रा की घटनाओंए मानवीय आदतोंए कमियों.खूबियों को उन्होंने उतने ही सहज रूप में लिखा हैए जितना बाकी की दुनिया ने उसे कठिन बना रखा है। निर्मल वर्मा खुद भी मस्त रहते थे और कोशिश करते थे कि आस.पास सब मगन रहेंए जीते रहें। निर्मल वर्मा जिंदगी के नैराश्य से हाथ छुड़ाकर भागन में यकीन नहीं रखतेए बल्कि उन्होंने कालेपन को बिल्कुल अपना लिया थाए अपना हिस्सा बना लिया था। नतीजन वे नैराश्य का भी आनंद लेते थे।

निर्मल वर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

स्टीफेंस कालेज से इतिहास में एमण्एण् करने के बाद पढ़ाना शुरू कर दिया था। चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य.विद्या संस्थान प्राग के निमंत्रण पर 1959 में वहां चले गए और चेक उपन्यासों तथा कहानियों का हिंदी अनुवाद किया। इस दरम्यान उनकी लेखनी से कैरेल चापेकए जीरी फ्राईडए जोसेफ स्कोवर्स्की और मिलान कुंदेरा जैसे लेखकों की कृतियों का हिंदी अनुवाद सामने आया। निर्मल वर्मा को हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों का ज्ञान था। लेकिन निर्मल वर्मा का मुख्य योगदान हिंदी कथा.साहित्य के क्षेत्र में माना जाता है। 1970 तक निर्मल यूरोप प्रवास पर रहे। यूरोप के पूर्वी.पश्चिमी हिस्सों में वो खूब घूमे और वहां रहकर उन्होंने आधुनिक यूरोपीय समाज का गहरा अध्ययन किया। इस अध्ययन का असर उनके भारतीय सभ्यता और धर्म संबंधी चिंतन पर भी हुआ। यूरोप से वापसी के बाद निर्मल वर्मा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवान्स्ड स्टडीजए शिमला में फेलो चयनित हुए। यहां रहते हुए उन्होंने 'साहित्य में पौराणिक चेतना' विषय पर रिसर्च की।

2. साहित्य समीक्षा

साहित्य से सम्बंधित शायद ही कोई भारतीय पुरस्कार होगाए जो निर्मल वर्मा को न मिला हो। 'कव्वे और काला पानी' के लिए उन्हें 1985 में साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त हुआ। 1995 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'राममनोहर लोहिया अतिविशिष्ट सम्मान' मिला। 1995 में भारतीय ज्ञानपीठ की तरफ से 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' भी उन्हें मिला। 2000 में उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। साथ ही वे भारत सरकार की तरफ से पद्मभूषण से भी नवाजे गए।

निर्मल वर्मा के कुल छः कहानी संग्रह है। इनका पहला कहानी.संग्रह 'परिंदे तथा अन्य कहानियाँ'1959 में प्रकाशित हुआ था। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं। 'जलती गाड़ी' दूसरा संग्रह हैए जिसमें दस कहानियाँ संगृहित हैं। बाकी के चार हैं. 'पिछली गर्मियों में'(1968)ए 'बीच बहस में'(1973)ए 'कव्वे और काला पानी'(1983)ए 'सूखा तथा अन्य कहानियां'(1995)। इसके साथ ही निर्मल वर्मा ने पांच उपन्यास भी लिखे। पहला उपन्यास 'वे दिन' हैए दूसरा 'लाल टीन की छत'ए तीसरा 'एक चिथड़ा सुख'ए चौथा 'रात का रिपोर्टर'। 'अंतिम अरण्य' निर्मल वर्मा के उपन्यास लेखन का

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research(IJAMSR) ISSN:2581-4281 Volume 1, Issue 8 , October, 2018

https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अंतिम पड़ाव है।

3. प्रारंभिक जीवन

इनका जन्म ३ अप्रैल १९२९ को शिमला में हुआ था।ख्3, दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज से इतिहास में एम ए करने के बाद कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन किया। इन्हें वर्ष १९५९ से १९७२ तक यूरोप में प्रवास करने का अवसर मिला था और इस दौरान उन्होंने लगभग समूचे यूरोप की यात्रा करके वहाँ की भिन्न.भिन्न संस्कृतियों का नजदीक से परिचय प्राप्त किया था।ख्2, १९५९ से प्राग ;चेकोस्लोवाकियाद्ध के प्राच्य विद्या संस्थान में सात वर्ष तक रहे। उसके बाद लंदन में रहते हुए टाइम्स ऑफ इंडिया के लिये सांस्कृतिक रिपोर्टिंग की। १९७२ में स्वदेश लौटे। १९७७ में आयोवा विश्व विद्यालय ;अमरीकाद्ध के इंटरनेशनल राइटर्स प्रोग्राम में हिस्सेदारी की। उनकी कहानी माया दर्पण पर फिल्म बनी जिसे १९७३ का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ एडवांस स्टडीज़ ;शिमलाद्ध के फेलो ;१९७३द्धए निराला सृजनपीठ भोपाल;१९८१.८३द्ध और यशपाल सृजनपीठ ;शिमलाद्ध के अध्यक्ष रहे ;१९८९द्ध। १९८८ में इंगलैंड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह द वर्ल्ड एल्सव्हेयर प्रकाशित। इसी समय बीबीसी द्वार उनपर डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रसारित हुई थी। फेफड़े की बीमारी से जूझने के बाद ७६ वर्ष की अवस्था में २६ अक्तूबरए २००५ को दिल्ली में उनका निधन हो गया।ख्3,

अपनी गंभीरए भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए जाने.जाने वाले निर्मल वर्मा को आधुनिक हिंदी कहानी के सबसे प्रतिष्ठित नामों में गिना जाता रहा हैए उनके लेखन की शैली सबसे अलग और पूरी तरह निजी थी। निर्मल वर्मा को भारत में साहित्य का शीर्ष सम्मान ज्ञानपीठ १९९९ में दिया गया। श्रात का रिपोर्टरश्ए श्एक चिथड़ा सुखश्ए श्लाल टीन की छतश् और श्वे दिनश् उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं। उनका अंतिम उपन्यास १९९० में प्रकाशित हुआ था..अंतिम अरण्य। उनकी एक सौ से अधिक कहानियाँ कई संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं जिनमें श्परिंदेश्ए श्कौवे और काला पानीश्ए श्बीच बहस मेंश्ए श्जलती झाड़ीश् आदि प्रमुख हैं। श्धुंध से उठती धुनश् और श्चीड़ों पर चाँदनीश् उनके यात्रा वृतांत हैं जिन्होंने लेखन की इस विधा को नए मायने दिए हैं। निर्मल वर्मा को सन २००२ में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अपने निधन के समय निर्मल वर्मा भारत सरकार द्वारा औपचारिक रूप से नोबेल पुरस्कार के लिए नामित थे !

4. प्रकाशन

कार्यक्षेत्र

वे इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ़ एडवांस स्टडीज़ ;शिमलाद्ध के फेलो ;1973द्धए निराला सृजनपीठ भोपाल ;1981.83द्ध और यशपाल सृजनपीठ ;शिमलाद्ध के अध्यक्ष रहे। 1988 में इंग्लैंड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह श्द वर्ल्ड एल्सव्हेयरश् प्रकाशित हुआ। इसी समय बीबीसी द्वार उन पर एक डाक्यूमेंट्री फ़िल्म भी प्रसारित हुई।

कृतियाँ

‘रात का रिपोर्टरष्ए ‘एक चिथड़ा सुखष्ए ‘लाल टीन की छतष् और ‘वे दिनष् निर्मल वर्मा के चर्चित उपन्यास है। उनका अंतिम उपन्यास ‘अंतिम अरण्यष् 1990 में प्रकाशित हुआ। उनकी सौ से अधिक कहानियाँ कई कहानी संग्रहों में प्रकाशित हुई। 1958 में ‘परिंदेष् कहानी से प्रसिद्धी पाने वाले निर्मल वर्मा ने ‘धुंध से उठती धुनष् और ‘चीड़ों पर चाँदनीष् यात्रा वृतांत भी लिखेए जिसने उनकी लेखन विधा को नये मायने दिए।

निर्मल वर्मा ने अनेक कहानियाँए उपन्यासए यात्रा वृतांतए संस्मरण आदि लिखे हैं। उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैंरू

उपन्यास

1ण् वे दिन ;1964द्ध

2ण् लाल टीन की छत ;1974द्ध

3ण् एक चिथड़ा सुख ;1979द्ध

4ण् रात का रिपोर्टर ;1989द्ध

5ण् अंतिम अरण्य ;2000द्ध

कहानी संग्रह

1ण् परिंदे ;1959द्ध

2ण् जलती झाड़ी ;1965द्ध

3ण् पिछली गर्मियों में ;1968द्ध

4ण् बीच बहस में ;1973द्ध

5ण् मेरी प्रिय कहानियाँ ;1973द्ध

6ण् प्रतिनिधि कहानियाँ ;1988द्ध

7ण् कव्वे और काला पानी ;1983द्ध

8ण् सूखा तथा अन्य कहानियाँ ;1995द्ध

https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

9ण संपूर्ण कहानियाँ ;2005द्ध

यात्रा.संस्मरण व डायरी

1ण चीड़ों पर चाँदनी ;1963द्ध

2ण हर बारिश में ;1970द्ध

3ण धुँध से उठती धुन ;1977द्ध

निबंध

1ण शब्द और स्मृति ;1976द्ध

2ण कला का जोखिम ;1981द्ध

3ण ढलान से उतरते हुए ;1985द्ध

4ण भारत और यूरोप रू प्रतिश्रुति के क्षेत्र ;1991द्ध

5ण इतिहास स्मृति आकांक्षा ;1991द्ध

6ण शताब्दी के ढलते वर्षों में ;1995द्ध

7ण अन्त और आरम्भ ;2001द्ध

नाटक

1ण तीन एकान्त ;1976द्ध

संचयन

1ण दूसरी दुनिया ;1978द्ध

2ण परिवर्द्धित नया संस्करण ;2005द्ध

अनुवाद

1ण कुप्रिन की कहानियाँ ;1955द्ध

2ण रोमियो जूलियट और अँधेरा ;1962द्ध

3ण झोंपड़ीवाले ;1966द्ध

4ण बाहर और परे ;1967द्ध

5ण बचपन ;1970द्ध

6ण आर यू आर ;1972द्ध

योगदान

प्रमचंद और उनके समकक्ष साहित्यकारों जैसे भगवतीचरण वर्माए फणीश्वरनाथ रेणु आदि के बाद साहित्यिक परिदृश्य एकदम से बदल गया। विशेषकर साठ.सत्तर के दशक के दौरान और उसके बाद बहुत कम लेखक हुए जिन्हें कला की दृष्टि से हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान के लिये याद किया जायेगा। संख्या में गुणवत्ता के सापेक्ष आनुपातिक वृद्धि ही हुई। इसके कारणों में ये प्रमुख रहे। हिन्दी का सरकारीकरणए नये वादों.विवादों का उदयए उपभोक्तावाद का वर्चस्व आदि। उनके जैसे साहित्यकार से उनके समकालीन और बाद के

https://doi.org/10.31426/ijamsr.2018.1.8.816

IJAMSR

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

साहित्यकार जितना कुछ सीख सकते थे और अपने योगदान में अभिवृद्धि कर सकते थे उतना वे नहीं कर पाये। उन्हें जितना मान दिया गया उतना ही उनका अनदेखा भी हुआ। जितनी चर्चा उनकी कृतियों पर होनी चाहिये थी शायद वह हुई ही नहीं। वे उन चुने हुए व्यक्तियों में थे जिन्होंने साहित्य और कला की निष्काम साधना की और जीवनपर्यन्त अपने मूल्यों का निर्वाह किया।

निष्कर्ष

हिंदी कहानी में आधुनिकता का बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का नाम अग्रणी है। इनका मुख्य योगदान हिंदी कथा.साहित्य के क्षेत्र में माना जाता है। परिंदेए जलती झाड़ीए तीन एकांतए पिछली गरमियों मेंए कव्वे और काला पानीए बीच बहस मेंए सूखा तथा अन्य कहानियाँ आदि कहानी.संग्रह और वे दिनए लाल टीन की छतए एक चिथड़ा सुख तथा अंतिम अरण्य इनके उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

सन्दर्भ

1प *वर्माए निर्मल ;२०१०द्धप मेरी प्रिय कहानियाँप दिल्लीरू राजपाल एण्ड सन्ज़प पृ॰ प्रस्तावनाप* द्यंबबमे.कंजमत्र दिए जाने पर द्यनतसत्र भी दिया होना चाहिए ;मददद्ध

2प निर्मल वर्मा के चिंतन में भारत और यूरोप का द्वन्द्व। सृजन शिल्पी। ७ अक्टूबर २००६

3प साहित्यकार निर्मल वर्मा का निधन। बीबीसी.हिन्दी। २६ अक्टूबर २००५

4प *निर्मल वर्मा ;हिन्दीद्ध ;एचण्टीण्एमण्एलद्ध अभिव्यक्ति। अभिगमन तिथिरू 16 जनवरीए 2012।*

5प *निर्मल वर्मा का साहित्य चलचित्रमय है ;हिन्दीद्ध ;एचण्टीण्एमण्एलद्ध वेब दुनिया हिन्दी। अभिगमन तिथिरू 16 जनवरीए 2012।*

6. *अंतिम अरण्यः के बहाने निर्मल वर्मा के साहित्य पर एक दृष्टि ;हिन्दीद्ध ;एचण्टीण्एमण्एलद्ध साहित्य कुञ्ज। अभिगमन तिथिरू 16 जनवरीए 2012।*